GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

प्राचीन भारत की सैन्य व्यवस्था एवं युद्ध प्रणाली की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ सत्य प्रकाश
(इतिहास विभागाध्यक्ष)
डॉ बी आर अंबेडकर जन्म शताब्दी महाविद्यालय धनसारी अलीगढ़
मोबाइल नंबर – 9719699128
ई–मेल – satyaanandvibhu123@gmail.com

शोध सारांश

प्राचीन भारत राष्ट्र की सुरक्षा एवं सैन्य व्यवस्था के स्वरूप का विशिष्ट व गौरवशाली इतिहास रहा है। प्राचीन भारतीय सैन्य व्यवस्था एवं युद्ध प्रणालियों का वर्णन काव्यात्मक जैसे – वेद, पुराण, नीतिशास्त्र, रामायण और महाभारत में विस्तृत रूप से मिलता है । भारत में सैन्य पद्धति का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि उसकी सभ्यता । हमारे गौरवशाली इतिहास के लिए सैन्य पद्धति और युद्ध प्रणाली कोई अपरिचित वस्तु नहीं है । मौर्य वंश के राजाओं की सैन्य व्यवस्था अत्यंत उत्तम और श्रेष्ठ थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था का उत्तम ढंग से उल्लेख किया है। महाकाव्य काल में सेना चार प्रकार की होती थी । मनुस्मृति में सेना छह प्रकार की, महाभारत के अनुसार आठ प्रकार की, मौर्य काल में चार प्रकार की सेना का उल्लेख मिलता है जबकि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में 6 प्रकार की सेना के अंगों का वर्णन किया है।

प्राचीन भारत में सामरिक विशिष्टताओं के आधार पर सेना प्रमुख रूप से आठ प्रकार की होती थी जिसमें रथ सेना , हस्त सेना ,अश्वरोही, विशिष्ट बल ,जल सेना, पैदल सेना प्रमुख थी। सैनिकों की संख्या सामान्यतः परिस्थिति और राजा की कार्य कुशलता के ऊपर निर्भर करती थी। सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए सैनिकों की संख्या को घटा या बढ़ा भी सकते थे। प्राचीन काल मुख्यतः मौर्यकालीन व गुप्त कालीन सैन्य व्यवस्था और राजाओं की

युद्ध प्रणाली उत्तम प्रकार की थी जिसकी वर्तमान में प्रासंगिकता है। हमारे देश की सरकार प्राचीन भारतीय राजाओं की सैन्य व्यवस्था का अनुशरण करके बेहतर युद्ध प्रणाली और सैन्य व्यवस्था को बना सकते हैं । प्राचीनकालीन सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली सर्वोत्तम थी किन्तु बहुत कुछ निर्भर करता था राजा या शासक की क्षमता और कार्यकुशलता पर।

मूल शब्दः प्राचीन भारतीय सैन्य व्यवस्था, प्राचीन युद्ध प्रणाली, मौर्यकालीन व गुप्तकालीन सैन्य पद्धति, सुरक्षा बल, मित्र बल सामरिक विशिष्टता, युद्ध प्रणाली,आयुधागाराध्यक्ष, शस्त्रास्त्र, सुरक्षा व्यवस्था, सैन्य पद्धति इत्यादि।

शोध उद्देश्य

1– प्राचीनकालीन भारतीय सैन्य पद्धति का अध्ययन करना।

2– प्राचीनकालीन भारतीय युद्ध प्रणाली का अवलोकन करना।

3– मौर्यकालीन शासकों की सैन्य व युद्ध पद्धतियों का अध्ययन करना।

4– प्राचीन भारत की सैन्य व्यवस्था एवं युद्ध प्रणालियों के इतिहास को ज्ञात करना

5– प्राचीन भारतीय सैन्य पद्धति और युद्ध प्रणालियों की वर्तमान में प्रासंगिकता ज्ञात करना।

शोध प्रस्तावना

प्राचीनकालीन भारत की सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली का विस्तार पूर्वक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय सैन्य इतिहास का कोई क्रमिक एवं लिखित वर्णन नहीं मिलता है । पाषाण काल और सिंधु घाटी सभ्यता के समय की सैन्य पद्धति का केवल अनुमान लगाया जा सकता है क्योंकि इस समय का कोई लिखित या क्रमिक साक्ष्य प्राप्त नहीं है। मौर्य काल तक की सैन्य पद्धति का अवलोकन साहित्यिक ग्रंथों द्वारा किया गया है। मौर्य काल के सैन्य पद्धति का विस्तार से वर्णन कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में किया है। आर्यों से पूर्व दुर्ग निर्मित किए जाते थे, किंतु आर्यों ने दुर्गों का निर्माण नहीं किया यद्यपि उन्होंने शत्रु के दुर्गों को तोड़ा अवश्य था। इंद्र को दुर्ग तोड़ने वाले देव या राजा के रूप में ख्याति प्राप्त

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

हुई थी। प्राचीन कालीन भारतीय सैन्य या युद्ध पद्धति का स्वरूप समय–समय पर बदलता रहा है । मनुस्मृति में छह प्रकार की सेना , महाभारत के अनुसार आठ प्रकार की सेना , मौर्य काल में चार प्रकार की सेना ,कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार छः प्रकार की सेना का वर्णन मिलता है। जबकि प्राचीन काल में सामरिक विशेषता के आधार पर सेना प्रमुख रूप से आठ प्रकार की होती थी। सामान्यतः सैनिकों की संख्या समय परिस्थिति और राजा की कार्य कुशलता पर निर्भर करती थी । ये परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रहती थी। प्राचीन कालीन भारतीय सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली वर्तमान में प्रासंगिक हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख मूल रूप से वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और अन्वेषणात्मक शोध पद्धतियों पर पूर्णतया आधारित है । इस शोध आलेख में प्राचीन कालीन भारतीय सैन्य पद्धतियों और सैन्य व्यवस्थाओं का अध्ययन किया गया है । इस शोध आलेख में प्राचीन कालीन सैन्य व्यवस्था से संबंधित प्राथमिक, द्वितीयक और शोध आंकड़ों का पूरी तरह से प्रयोग किया गया है। इस शोध आलेख से संबंधित स्रोतों के रूप में अनेक संदर्भ ग्रंथ शोध जनरलों और संबंधित शोध आलेखों का प्रयोग किया गया है । मुख्यरूप से द्वितीय स्रोतों या आंकड़ों का प्रयोग करके शोध को महत्वपूर्ण और प्रभावशाली बनाने का पूरी तरह से प्रयत्न किया गया है।

किसी भी राष्ट्र की रक्षा , सुरक्षा एवं सेना के स्वरूप पर उसके इतिहास का विशिष्ट प्रभाव पड़ता है । प्राचीन भारतीय सैन्य व्यवस्थाओं और युद्ध प्रणालियों का वर्णन काव्यात्मक रुप में मिला। जैसे– वेद ,पुराण, नीति शास्त्र, रामायण और महाभारत में विस्तृत रूप से मिलता है। भारत में सैन्य पद्धति का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि उसकी सभ्यता । युद्ध हमारे इतिहास के लिए अपरिचित वस्तु नहीं है। प्राचीन भारतीय सैन्य पद्धति और युद्ध प्रणाली का कोई क्रमागत एवं लिखित वर्णन नहीं मिलता है ।पाषाण काल और सिंधु घाटी सभ्यता के समय की सैन्य पद्धति का केवल अनुमान लगाया जा सकता है। वैदिक काल से

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

पूर्व मौर्य काल तक की सैनिक पद्धति का अन्वेषण केवल साहित्यिक जैसे वेद, पुराण, रामायण ,महाभारत या नीति शास्त्र में किया जा सकता है । मौर्य वंश के राजाओं की सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली का उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विस्तार से मिलता है। ''वैदिक काल की समयावधि"को 1500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व तक माना जाता है । यह युग भारत में आर्यों के वैभव प्रसार का युग है । प्रारंभ में आर्य युद्ध की इच्छा से भारत में नहीं आए परंतु जब वे भारत में आकर बस गई तो उन्हें भारत के मूल निवासियों से युद्ध करना पड़ा और अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए युद्ध में अभूतपूर्व विकास किये।''1

वैदिक कालीन राजाओं के पास कोई निश्चित सेना नहीं होती थी । इसलिए वे इसके लिए स्थानीय मुखिया(कुल नेता) पर निर्भर रहते थे । इस समय समाज चार वर्गों में बट चुका था– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। क्षत्रिय देश की रक्षा के लिए उत्तरदाई होते थे। वह अपने हथियारों के लिए स्वयं उत्तरदाई होते थे। सेना दो प्रकार की होती थी– रथ व पैदल सेना ।कहीं–कहीं पर हाथियों एवं अश्वों के प्रयोग का भी उल्लेख मिलता है। ''2 प्राचीन काल सैन्य व्यवस्था में रथी सेना व रथी यौद्धाओं को अधिक सम्मान प्राप्त था। ''रथों में दो या दो से अधिक अश्व जोते जाते थे । सेना की संख्या के संदर्भ में भी निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता । अनुमानतः एक सैन्य दल में यह संख्या 1 लाख के समीप होती होगी । इनके प्रमुख हथियार धनुष ,वाण होते थे किंतु तलवार, बल्लम ,फरसा, तथा फेंक कर प्रयोग किए जाने वाले पत्थरों का भी प्रयोग किया जाता था। सभी प्रकार के हथियार पीतल व तांबे के बनाए जाते थे। प्रतिरक्षात्मक हथियार जैसे सर पर टोप व ढाल चमड़े के बनाए जाते थे। ''3 तत्कालीन समाज में शूद्रध्दासध्अनार्यों की स्थिति बेहतर न थी। ये भारत के मूल निवासी भी कहलाते थे जिनका वैदिक काल में प्रमुख कार्य ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य की सेवा करने के अलावा टॉप और चमड़े के दल भी बनाने में लगे रहते थे। इसके अलावा इन लोगों का मूल काम कृषि करना तथा जरूरत के अनुसार पशुपालन भी करते थे। जैसे दूध के उपयोग हेतु गाय ,भैंस, बकरी, सवारी करने हेतु घोड़ा, हाथी , कृषि के लिए बैल ,भैंसा व ऊंट को पालते थे।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

''आर्यों को उत्तर भारत के मूल निवासियों से संघर्ष करना पड़ा था जो अनार्य थे जिनको आर्य लोग हेय दृष्टि से देखते या समझते थे। ''4

तत्कालीन आर्य यातायात से भी परिचित थे तथा बड़े–बड़े सामुद्रिक जलयानो एवं नावों का प्रयोग करते हुए यातायात और व्यापार के लिए करते थे किंतु युद्ध में उनके प्रयोग का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। ''आर्यों से पूर्व दुर्गा निर्मित किए जाते थे किंतु आर्यों ने दुर्गों का निर्माण नहीं किया यद्यपि उन्होंने शत्रुओं के दुर्गों को तोड़ा आवश्यक था। इंद्र को दुर्ग तोड़ने वाले राजा के रूप में ख्याति प्राप्त थी। ''5

प्राचीन काल में युद्ध में प्रमुख द्वंद रथियों के बीच होता था। पैदल सैनिक रथों के निकट पंक्तियों में उनकी सुरक्षा हेतु लड़ते थे। युद्ध आरंभ होने पर पत्थरों की वर्षा भी की जाती थी। लकड़ी की दीवारों से रुकावट निर्मित की जाती थी। पीतल से बनी रुकावटें भी खड़ी की जाती थी। ''देवताओं को अपनी सहायता के वास्ते बलि भी दी जाती थी तदुपरांत तीव्र ध्वनि से युद्ध गीतों, वाद्य यंत्रों की ध्वनि एवं लहराते हुए झंडों के साथ आगे बढ़ती थी। योद्धा पीतल से बनी चौन से निर्मित कोट एवं शिरास्त्र पहनते थे। पैदल योद्धा रथों के पीछे पंक्तियों में गांव तथा जातियों के् क्रम में खड़े होते थे । वे शत्रु पर पंखों वाले तीर जिनकी नोंक विष में बुझी होती थी फेंकते थे। जब शत्रु को जीत लिया जाता था तो जोर–जोर से आवाज करते थे व ड्रम बजाते थे। इसके बाद ईश्वर के लिए आग समर्पित करते थे तथा धन्यवाद के गीत गाते थे। ''6

समय के साथ–साथ सेना और युद्ध प्रणाली में भी परिवर्तन देखने को मिले थे । परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। जैसे ''महाकाव्यकालीन युग में सेना चार प्रकार की (रथ,हस्ति, अश्व व पैदल सेना) जिसे चतुरंग बल कहते थे। मनुस्मृति में छह प्रकार की, महाभारत के समय 8 प्रकार की सेना होती थी। इस युग में राजा स्वयं की दो प्रकार की सेना (नागरिक सेना व वेतन भोगी सेना) रखते थे। सेना स्थाई और युद्ध के समय गठित दोनों

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

प्रकार की होती थी । सेना प्रशिक्षित एवं अच्छी तरह संगठित भी होती थी। दुर्ग व खाइयों का महत्व बढ़ गया था। रामायण में चार प्रकार के दुर्ग नादेय(जलदुर्ग)वनदुर्ग, पर्वत दुर्ग व कृत्रिम दुर्ग होते थे तो महाभारत में 6 प्रकार के दुर्ग –मरू,मही, गिरि, मनुष्य, मृद एवं वन दुर्ग पाए जाते थे। ''7 इस कल की सेना को नियमित ढंग से वेतन भी दिए जाने का उल्लेख मिलता है। '' प्रत्येक सैनिक को वेतन के रूप में नकद और पदार्थ(वस्तु)दोनों दिए जाते थे । सर्वोच्च सेनापति सारी सेना का अधिकारी था। ''8 इस काल में सैनिक युद्ध नियमों से भली भांति परिचित थे । ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि राम लंका विजय के बाद स्वयं अयोध्या के लिए पुष्पक विमान से लौटे थे। ऐसे ही महाभारत में भी आकाश मार्ग से शस्त्रों के गिराए जाने का उल्लेख मिलता है जो वायुयान द्वारा ही संभव है यह सिर्फ कल्पना प्रतीत ही लगता है क्योंकि उस समय वायुयान का आविष्कार हो गया था यह सवाल है।उस समय के वायुयान के संबंध में कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है।

मौर्य कालीन सैन्य पद्धति में मुख्यतः चार प्रकार की सेना होती थी। रथ ,गज, अश्व एवं पैदल सेना। अशोक के समय गजसेना का महत्व बढ़ गया था। इसके अतिरिक्त चार अन्य सहायक बल थे – विशिष्ट बल, माल ढोने वाले श्रमिक , नाविक, साधारण जनता व सैनिकों में उत्साह पैदा करने वाले होते थे।कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार सेना के 6 अंग होते थे।जो हैं –

''1–मौलबलः यह राजधानी की रक्षा करने वाली वंशानुगत रूप से स्थाई सेना होती थी जो सर्वाधिक विश्वसनीय भी होती थी।

2–भृतकबलः वेतन प्राप्त करने वाली प्रायः युद्ध के समय भर्ती की जाने वाली सेना होती थी।

3–श्रेणीबलः समाज के वीर व युद्ध के लिए उत्साहित नागरिकों की सेना होती थी।

4–मित्रबलः यह मित्र राजाओं द्वारा प्रदत्त सेना होती है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

5–अमित्रबलः शत्रु राजा पर विजय के बाद उसकी सेना को तथा शत्रु राजा जिनका परित्याग कर देता था उसे अपनी सेना में मिल लिया जाता था । इस तरीके से यह अमित्रबल होती थी।

6–अटवीबलः जंगली जातियों में से भर्ती की जाने वाली सेना जो शत्रु के क्षेत्र में लूट मार करते थे। वह दुश्मन के क्षेत्र में मार्ग निर्देशन का कार्य भी करते थे। ''9

नंद वंश के अंत होने पर चंद्रगुप्त मौर्य को मगध की एक विशाल सेना प्राप्त हुई साथ ही चंद्रगुप्त मौर्य ने पर्याप्त सैनिकों की भर्ती की । मेगास्थनीज ने लिखा है कि, ''चंद्रगुप्त की सेना में 6 लाख से भी अधिक पैदल सैनिक थे, 30000अश्व, 9000 हाथी, 8000 रथ सैनिक थे। संपूर्ण सेना का प्रबंध 30 सदस्यों के एक आयोग के हाथ में था। यह पांच पांच सदस्यों के 6 बोर्डों में विभक्त था। पहले बोर्ड का नौसेना से, दूसरे का वाहन पूर्ति (रसद), तीसरे का पैदल सेना से, चौथ का घुड़सवार सेना से, पांचवे का युद्ध क्षेत्र में रथों का प्रबंध तथा छठे बोर्ड का हाथियों का प्रबंध था। ''10

मेगास्थनीज ने आगे लिखा है कि , ''भारतीय समाज में किसानों के बाद सैनिकों की संख्या अधिक थी । सैनिकों को नियमित वेतन मिलता था। राज्य द्वारा उन्हें अस्त्र–शस्त्र भी मिलते थे । सैनिकों का वेतन इतना था कि वह सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते थे। वह स्वतंत्रता का भोग पूर्ण रूपेण करते थे। युद्ध काल में भी जब वे शिविरों में रहते थे तो उन्हें नौकर मिलते थे जो अस्त्र–शस्त्रों को साफ करते थे । घोड़ों की देखभाल भी करते थे तथा रथों का संचालन करते थे।''11

प्राचीन काल में सामरिक विशिष्टता के आधार पर सेना मुख्य रूप से आठ प्रकार की होती थी– रथ सेना ,हस्ति सेना ,अश्वरोही सेना ,विशिष्ट बल, जल सेना ,चरबल, देशिका बल, पैदल सेना। सैनिकों की संख्या समय ,स्थिति तथा राजा की कार्य कुशलता पर निर्भर करती थी । राजा राज्य की सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए सैनिकों की संख्या को घटा बढ़ा सकते थे।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

कौटिल्य ने आयुधागाराध्यक्ष के कर्तव्यों में आक्रामक एवं प्रतिरक्षात्मक दोनों प्रकार के शस्त्र निर्मित करने और उनकी देखभाल करने की छंव्यवस्था का वर्णन किया है। उन्होंने हथियारों के अतिरिक्त 10 प्रकार के स्थित यंत्र और 17 प्रकार के चल यंत्रों का उल्लेख किया है जो निम्न प्रकार से हैं–

स्थित यंत्रः सर्वतो भद्र– अपनी जगह स्थिर रहकर चारों ओर गोलियों की बौछार करना।

जामदग्नय–बड़े–बड़े गोले फेंकने वाला।

घातीः जिसके स्पर्श से ही व्यक्ति मर जाये।

संघाटिः यह अग्नि यंत्र था।

पर्जन्जकः अग्नि को शांत करने वाला वरुणास्त्र ।

चलयन्त्र –तालवृन्तः चारों ओर घूमने वाला यंत्र सुन्दर, स्पृक्तला(कांटो वाली गधा),आस्फोटिम(मिट्टी के ढेले या पत्थर फेंकने वाला यंत्र), शतघ्नी(एक साथ 100 बाण निकलते थे),चक्र।

आक्रामक हथियार – खड़क(तलवार) हल मुख(भला)आयुध(पाषाण शस्त्र) धनुष (तीन प्रकार के) बाण(पांच प्रकार के)

प्राचीन भारतीय इतिहास में प्रतिरक्षक हथियार भी प्रचलन में रहते थे। जैसे–

1–लोहजाल –संपूर्ण शरीर को ढकने वाला आवरण। 2–लोह जालिका–सिर के अतिरिक्त पूरे शरीर को ढकने वाला आवरण। 3–लोह पट्ट –शरीर के आगे पीछे के भागों को ढकने वाला आवरण। 4–लोह कवच–केवल पीठ व वक्ष को ढकने वाला। 5–सूतकंकड–सूत से बना हुआ कवच। 6–शिरस्त्राण–सिर को ढकने वाला। 7–कण्ठत्राण–गले की रक्षा करने वाला। 8–नागोदरिका–हाथों की अंगुलियों का रक्षक।

प्राचीन भारतीय सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली की वर्तमान में प्रासंगिकता है क्योंकि –

– प्राचीन भारतीय राजाओं और महाराजाओं के पास विशाल और पर्याप्त सेना होती थी।

– प्राचीन शासकों के पास स्थायी और प्रशिक्षण प्राप्त तथा अप्रशिक्षित सेना होती थी।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

– सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, कनिष्क, चन्द्र गुप्त, समुद्र गुप्त, हर्षवर्धन इत्यादि शासकों की संगठित और प्रभावशाली सेना थी जिसके कारण इनके समय में विस्तृत, संगठित, और अखंड भारत देखने को मिला।

– प्राचीन भारतीय राजा सेना को नकद या फिर वस्तु के रूप में वेतन देते थे।

– राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए प्राचीन भारतीय सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली वर्तमान में प्रासंगिक हैं।

प्राचीन कालीन राजाओं की क्षमता और कार्य कुशलता हमें युद्ध संरक्षण के समय दिखाई पड़ती थी। मौर्य कालीन विशाल सेना का सफल संचालन वैज्ञानिक विधि से ही किया जा सकता था। इतिहासकार जस्टिन के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य की सेना डाकुओं का विरोध था। मौर्यकालीन राजाओं ने नंदवंशज राजाओं से तीन गुना अधिक सेना रखी थी। इस विशाल सेना व्यवस्था के आधार पर ही मौर्यकालीन राजाओं ने उत्तर भारत को रौंद डाला था । मौर्य सम्राटों ने स्थाई सेना रखने का बंदोबस्त किया था। सेना की व्यवस्था के लिए युद्ध कार्यालय होता था। जिसमें छः उपविभाग(समितियों में बंटे)होते थे और प्रत्येक उपविभाग में 5 सदस्य थे। यह समितियां है– जल सेना समिति,यातायात, पैदल, घुड़सवार, गज और रथ सेना समिति के रूप में देखभाल करती थी। मौर्यकालीन सम्राटों में सम्राट अशोक का कार्य सैन्य प्रशिक्षण सैन्य अनुशासन तथा पर्याप्त सैन्य संगठन था। मंत्रिमंडल में उसका स्थान उच्च मंत्री के बराबर था। प्रत्येक इकाई एक सैन्य अधिकारी के अधीन थी । सम्राट अशोक प्राचीन भारत का प्रमुख सम्राट था जिसने कि, " राज्याभिषेक को हुए 8 वर्ष व्यतीत हो जाने पर 261 ईसा पूर्व में कलिंग देश पर आक्रमण किया और उसे जीत कर अपने अधीन कर लिया। कलिंग देश की स्थिति बंगाल की खाड़ी के साथ गोदावरी और महानदी के बीच के प्रदेश में थी। कलिंग नरेश उस युग के अत्यंत शक्तिशाली राज्यों में से एक था।"12 सम्राट अशोक ने मौर्य साम्राज्य को भारत वर्ष में फैलाया। मौर्य साम्राज्य और गुप्त साम्राज्य के समय भारत में सैन्य व्यवस्था एवं युद्ध प्रणालियों का पर्याप्त विकास हुआ। जिसका अनुसरण करके वर्तमान में सैन्य व्यवस्था

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

और सुरक्षा को दुरुस्त किया जा सकता है। प्राचीन भारतीय सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली वर्तमान में प्रासंगिक हैं इसका अनुसरण करके भारत सरकार उचित नीति बनाकर देश में एकता और अखंडता स्थापित कर समाज में समन्वय स्थापित कर सकती है।

निष्कर्ष

हम निः संदेश कह सकते हैं कि प्राचीन भारत की सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली का गौरवशाली इतिहास रहा है भारतीय सेनांग सुसंगठित और शक्तिशाली रहे हैं। इसी प्रकार युद्ध प्रणाली मौर्य काल में प्रभावशाली थी। चंद्रगुप्त मौर्य ने भारत की सीमाओं को युद्ध के माध्यम से विस्तृत किया सम्राट अशोक ने भी अपने समय में साम्राज्य का विस्तार किया। सम्राट अशोक की नीतियां सर्वश्रेष्ठ थी क्योंकि वे सब लोक कल्याणकारी और जनहितकारी नीतियां थीं । प्राचीन कालीन शासक और उनकी मजबूत सैन्य व्यवस्था व युद्ध प्रणाली मजबूत थी। सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली शासको के समय में अलग–अलग रही प्रत्येक शासक मजबूत सैन्य व्यवस्था अपनी प्रजा में धाक जमाने आंतरिक शांति व्यवस्था बनाए रखने और बाहरी शक्तियों का मुकाबला करने हेतु शक्ति शाली सेना रखते थे। जब–जब भारत पर विदेशी आक्रमण हुए तब तक भारतीय शासको ने दमदारी से मुकाबला किया। प्राचीन भारतीय कुछ राजाओं की सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली श्रेष्ठ थी। जैसे सम्राट अशोक, चन्द्र गुप्त मौर्य,कनिष्क, हर्षवर्धन इत्यादि जिसका आज भी महत्व है। आज (वर्तमान में) सैन्य व्यवस्था को सशक्त और मजबूत बनाने में प्राचीन कालीन सैन्य व्यवस्था और युद्ध प्रणाली वर्तमान में प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1– मजूमदार, बी एनः इंडिया मिलट्री हिस्ट्री पृष्ठ संख्या 001

2– शर्मा, डॉ एस डी : भारतीय सैन्य पद्धति भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ वर्ष 1997 प्रश्न संख्या 9

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

3– शर्मा ,डॉ एस डी : भारतीय सैन्य पद्धति, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ वर्ष 1997 पृष्ठ संख्या 10

4– थापर, रोमिलाः भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, वर्ष 2015 पृष्ठ संख्या 28

5– शर्मा, डॉ एस डी : भारतीय सैन्य पद्धति, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ ,वर्ष 1997, पृष्ठ संख्या 10

6– शर्मा ,डॉ एस डी : भारतीय सैन्य पद्धति , भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ वर्ष 1997 पृष्ठ संख्या 10

7– मजूमदार, बी एनः इंडियन मिलट्री हिस्ट्री , पृष्ठ संख्या 4

8– महाजन, वी डीः प्राचीन भारत का इतिहास, एस चंद्र एंड कंपनी लिमिटेड नई दिल्ली, वर्ष 2000 पृष्ठ संख्या 127

9– शर्मा ,डॉ एस डीः भारतीय सैन्य पद्धति, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ वर्ष 1997 पृष्ठ संख्या 14

10– महाजन, वी डीः प्राचीन भारत का इतिहास , एस चंद्र एंड कंपनी लिमिटेड नई दिल्ली वर्ष 2000 पृष्ठ संख्या 316

11– महाजन, वी डी : प्राचीन भारत का इतिहास, एस चद्र एंड कंपनी लिमिटेड नई दिल्ली, वर्ष 2000 ,पृष्ठ संख्या 316

12– विद्यालंकार, सत्यकेतु : मौर्य साम्राज्य का इतिहास, श्री सरस्वती सदन नई दिल्ली, वर्ष 2017 पृष्ठ संख्या 478